

मुकदमों का विवरण

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड प्रशासनिक निर्माण

वी.

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एएफसीओएनएस (जेवी) और ए. एन. आर. (2023 का विविध अनुप्रयोग No.184)

में।

(2022 की विशेष अनुमति याचिका (सिविल) No.8553)

(सिविल अपील सं.4591 2023 का) 19 अक्टूबर, 2023

[एस. रवींद्र भाट और अरविंद कुमार, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: क्या एक मध्यस्थ न्यायाधिकरण द्वारा शुल्क का संशोधन अनु. के अनुसार अयोग्यता के आधार पर न्यायाधिकरण के अधिदेश को समाप्त कर देगा। 12 मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996।

मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, **1996। 12, 13 और 14-**चुनौती के आधार और प्रक्रिया-मध्यस्थ या न्यायाधिकरण की कार्रवाई करने में विफलता या असंभवता-पक्षों के बीच मध्यस्थता कार्यवाही-न्यायाधिकरण ने प्रत्येक मध्यस्थ के लिए सुनवाई शुल्क को संशोधित किया-प्रति सत्र **1,00,000-**तीन घंटे के प्रति सत्र-प्रत्यर्थी ने अंतिम सुनवाई के लिए संशोधित शुल्क का भुगतान किया-आवेदन यू/एस। **14** अपीलार्थी द्वारा न्यायाधिकरण के आदेश को चुनौती देते हुए कि एक पक्ष द्वारा विवादित बढ़ी हुई राशि का भुगतान, अपीलार्थी के लिए पूर्वाग्रह पैदा करता है और न्यायाधिकरण द्वारा निष्पक्ष तरीके से व्यवहार नहीं किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप न्यायाधिकरण न्यायिक रूप से आवश्यकतानुसार अपने कार्यों को करने में असमर्थ हो जाता है-उच्च न्यायालय द्वारा आवेदन को खारिज करना-सच्चाई:

आयोजित किया गया: शुल्क का निर्धारण संविदात्मक है, और जहां भी कोई पूर्व व्यवस्था या अदालत का आदेश नहीं है, न्यायाधिकरण को इसे सीमा पर तय करना होता है-शुल्क वृद्धि का सहारा केवल पक्षों की सहमति से लिया जा सकता है; 996 की स्थिति में

995

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

एक पक्ष द्वारा असहमति होने पर, न्यायाधिकरण को पिछली व्यवस्था को जारी रखना पड़ता है, या मध्यस्थ के रूप में कार्य करने से इनकार करना पड़ता है-इस बात पर जोर देकर कि शुल्क की वृद्धि प्रबल होनी चाहिए, यह प्रति अयोग्यता के बराबर नहीं है, जो न्यायाधिकरण की नियुक्ति को रद्द करने के स्तर तक पहुंचती है, और इसके जनादेश को समाप्त करती है-आवेदक की याचिका है कि न्यायाधिकरण की निष्पक्षता या स्वतंत्रता के बारे में न्यायोचित संदेह के अस्तित्व के कारण न्यायिक अयोग्यता की अवधारणा या एस के संदर्भ में वैधानिक अयोग्यता शर्तों के रूप में उल्लिखित संदेहों के अलावा।12(5), इसे कायम नहीं रखा जा सकता-उक्त अनुसूची में उल्लिखित आधारों के अलावा अन्य आधार, जो एस के संदर्भ में एक आवेदन का अवसर देते हैं।12(3) इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है-यदि आवेदक की याचिका को बरकरार रखा जाता है, तो परिणाम अदालत में एक विस्फोट और अन्य अप्रत्याशित परिणाम हो सकते हैं-संसद द्वारा सावधानीपूर्वक तैयार किए गए वैधानिक मार्ग को छोड़ना मध्यस्थता प्रक्रिया पर अनिश्चितता के और अधिक दौर ला सकता है-न्यायिक स्थिति वह कुंजी नहीं है जो उन दरवाजों को खोलती है जो मध्य-धारा में चुनौती देते हैं, और मध्यस्थता कार्यवाही के दौरान "उन द्वारों को नहीं खोलना चाहिए जो अदालत को बंद कर देते हैं" जो संभावित रूप से मध्यस्थता चुनौती के कारण बन सकते हैं, इसके अलावा जो अधिनियम निर्दिष्ट रूप से प्रदान करता है-मध्यस्थों को कार्यवाही फिर से शुरू करने और कानून के अनुसार मामले का फैसला करने का निर्देश।[पारस 33,34,39 और 40]

मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, **1996** -धारा **12**-मध्यस्थ की चुनौती के लिए आधार-मध्यस्थ की अयोग्यता का निर्धारण-स्पष्ट किया गया।[पारस **21-24,28-31**]

मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, **1996**-अभिव्यक्ति 'पक्षपात'-का अर्थ:

आयोजित किया गया:अधिनियम ने जानबूझकर एक अभिव्यक्ति 'पूर्वाग्रह' को टाला है, इसके बजाय उपयोग किया गया शब्द एक मध्यस्थ की निष्पक्षता के बारे में संदेह को न्यायसंगत ठहराता है, कई पहलुओं के साथ एक अभिव्यक्ति है-विषय वस्तु पूर्वाग्रह; आर्थिक पूर्वाग्रह और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह-विवाद के सही गुणों को उचित रूप से ध्यान में रखे बिना एक पक्ष के पक्ष या विपक्ष में निर्णय लेने की प्रवृत्ति पूर्वाग्रह है-उस प्रवृत्ति की उचित आशंका होनी चाहिए।[पैरा 18]

शहरों और अन्य संदर्भों की सूची

ओ. एन. जी. सी. बनाम ए. एफ. सी. ओ. एन. एस. गुनासा जे. वी. 2022 (10) एस. सी. आर. 660; पश्चिम राज्य

बंगाल बनाम शिवानंद पाठक (1998) 5 एस. सी. सी. 513:[1998] 1 एससीआर 811; एन. के.

997

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण बनाम एम./एस. ट्रांस्टननेलस्ट्रॉय एफकॉन्स (जेवी)

बाजपेयी बनाम भारत संघ (2012) 4 एससीसी 653:[2012] 2 एस. सी. आर. 433; राज्य

पंजाब बनाम देवेंद्रपाल सिंह भुल्लर (2011) 14 एस. सी. सी. 770:[2011] 15 एस. सी. आर. 540; सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट्स ऑन रिकॉर्ड एसोसिएशन बनाम भारत संघ (2016) 5 एस. सी. सी. 808:एच. आर. डी. निगम बनाम भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड [2017] 11 एस. सी. आर. 857; भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड बनाम यूनाइटेड टेलीकॉम लिमिटेड [2019] 6 एस. सी. आर. 97; अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण बनाम के. डी. बाली और एक अन्य [1988] 3 एससीआर 370; जी. सरना बनाम लखनऊ विश्वविद्यालय और अन्य। [1977] 1 एससीआर 64; सरकार के सचिव, परिवहन विभाग।, मद्रास बनाम मुनुसामी मुदलियार और अन्न [1988] पूरक 2 एससीआर 673; जी. एन. नायक बनाम गोवा विश्वविद्यालय [2002] 1 एस. सी. आर. 636; एस. पार्थसारथी बनाम आंध्र प्रदेश राज्य [1974] 1 एस. सी. आर. 697; कुमाऊं विकास मंडल बनाम गिरिजा शंकर पंत (2000) पूरक 4 एस. सी. सी. 248; रंजीत ठाकुर बनाम भारत संघ [1988] 1 एस. सी. आर. 512; एम./एस. वायस्टाल्पाइन शियेनन जी. एम. बी. एच. बनाम दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड [2017] 1 एस. सी. आर. 798; मानक लाल बनाम डॉ. प्रेम चंद [1957] 1 एस. सी. आर. 575; भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और अन्य। बनाम।गायत्री झांसी रोडवेज लिमिटेड

& ओआरएस [2019] 9 एससीआर 1001-संदर्भित।

आर. वी.बो स्ट्रीट मेट्रोपॉलिटन स्टाइपेंडरी मजिस्ट्रेट, पूर्व पी पिनोचेट उगार्ते (नंबर 2) [2000] 1 एसी 119; हॉलिबर्टन कंपनी बनाम चुब बरमूडा

बीमा लिमिटेड 2021 [2] सभी ई. आर. 1175-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

सिविल अपीलिय न्यायनिर्णय:2022 की विशेष अनुमति याचिका (सिविल) संख्या 8553 में 2023 का विविध आवेदन संख्या 184।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के 2022 के एसएलपी (सी) No.8553 में दिनांकित 13.05.2022 के निर्णय और आदेश से।

के साथ

2023 का सी. ए. No.4591।

रूप:

आर. वेंकटरमानी, ए. जी., डेरियस खंबाटा, एन. वेंकटरमण, रितिन राय, वरिष्ठ अधिवक्ता।, मनु शेषाद्री, अनिरुद्ध कृष्णन, आदित्य नारायण, अवीक गांगुली, अभिजीत लाल, सुश्री सौम्या शेरिंग, अनुभव मिश्रा, सुश्री मिथु जैन, साईराम अर्जुन सुरेश, चित्रांशुल ए. सिन्हा, राघवेंद्र रॉस दिवाकर, जसकरन सिंह भाटिया, सुश्री नम्रता लंगड़े, मेसर्स दुआ एसोसिएट्स, रमन यादव,

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

सुश्री नीतिका बजाज, सुश्री कोपाल मित्तल, सुश्री आस्था गर्ग, समीर अभ्यंकर, सुश्री निशी संगतानी, सुश्री वाणी वंदना छेत्री, सुश्री सुगंध राठौर, नमन जैन, अमीश टंडन, राहुल कुमार, हर्ष, आकाश ठाकुर, सुश्री अनुश्री कुलकर्णी, अधिवक्ता। उपस्थित दलों के लिए।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का निर्णय/आदेश

एस. रवींद्र भाट, जे.

1. चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड, आवेदक (इसके बाद "चेन्नई मेट्रो" के रूप में संदर्भित), केंद्र सरकार और तमिलनाडु सरकार के बीच एक संयुक्त उद्यम, ने एक सार्वजनिक निविदा के अनुसार, प्रतिवादी (इसके बाद "एफकोन्स" के रूप में संदर्भित) को अनुबंध प्रदान किया था। 1566 करोड़ रु. अनुबंध पर 31.01.2011 पर हस्ताक्षर किए गए थे। आखिरकार, 15.04.2021 पर, एफकोन्स ने कुछ अंतर्वर्ती कार्यवाही के बाद मध्यस्थता के लिए विवादों के कई प्रमुखों का संदर्भ मांगा। अंततः आई. डी. 1 पर यह सहमति बनी कि दो विवाद प्रमुखों (दावा 2 (बी) से 2 (डी)) और चेन्नई मेट्रो के जवाबी दावे को मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996 (इसके बाद "अधिनियम") के तहत तीन सदस्यीय न्यायाधिकरण को भेजा जाएगा। इसके बाद न्यायाधिकरण का गठन किया गया।

2. न्यायाधिकरण ने दिनांक 14.05.2021 के कार्यवृत्त द्वारा पक्षों के समझौते को दर्ज किया, कि प्रत्येक मध्यस्थ (न्यायाधिकरण के तीन सदस्य थे) के लिए सुनवाई शुल्क ₹ 1,00,000-सुनवाई की तारीख के प्रति सत्र पर निर्धारित किया गया था। कार्यवाही के दौरान, न्यायाधिकरण के एक सदस्य का निधन हो गया और उन्हें प्रतिस्थापित करना पड़ा, जो 12.08.2021 पर किया गया था। पक्षकार मध्यस्थता के संचालन के साथ आगे बढ़े। इस बीच, एक अन्य न्यायाधिकरण ने एफकोन्स के दो दावों पर विचार किया था। उन कार्यवाहियों में पारित पुरस्कार धारा 34 के तहत (एफकोन्स द्वारा) चुनौती का विषय बन गया जिसे मद्रास उच्च न्यायालय के एक आदेश द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। उस आदेश के खिलाफ अपील तब तक लंबित थी।

3. न्यायाधिकरण ने वर्तमान मामले में 13.04.2022 पर निर्णय लिया कि डिवीजन बेंच के परिणाम की प्रतीक्षा करने के लिए अपील के लंबित होने के कारण अपनी कार्यवाही का निलंबन न्याय के व्यापक हित में नहीं था और दावे के अन्य हिस्से के साथ आगे बढ़ा जो उसके समक्ष लंबित था। 10 वीं बैठक/सुनवाई 28.06.2022 पर आयोजित की गई थी और इसके कार्यवृत्त 999 थे

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफकोन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1000

01.07.2022 पर जारी किया गया। न्यायाधिकरण ने तीन घंटे के प्रत्येक सत्र के लिए देय शुल्क को ₹ 1,00,000 से ₹ 2,00,000 में संशोधित करने की मांग की। चेन्नई मेट्रो ने एक एफ़ी डेविट के

माध्यम से 08.07.2022 पर इस संशोधन पर आपत्ति जताई। वृद्धि के साथ अपनी असहमति व्यक्त करते हुए, एफ़कॉन्स ने अपने एफ़ी डेविट दिनांक 10.07.2022 द्वारा प्रस्तुत किया कि अधिनियम की अनुसूची IV की प्रयोज्यता, और न्यायाधिकरणों के शुल्क में वृद्धि का मुद्दा, प्रारंभिक निर्णय के बाद, इस अदालत के समक्ष विचाराधीन था और तर्क 11.05.2022 पर समाप्त हुए थे। एफ़कॉन्स ने इसलिए न्यायाधिकरण से अनुरोध किया कि वह इस अदालत के फैसले तक शुल्क में संशोधन के अपने निर्देश को स्थगित रखे। इन परिस्थितियों में, कार्यवाही जारी रही और चेन्नई मेट्रो द्वारा सुनवाई की तीन बाद की तारीखों पर एफ़कॉन्स के गवाहों से जिरह की गई। चेन्नई मेट्रो के अनुसार, शुल्क का मुद्दा नहीं उठाया गया था; फिर भी 24.07.2022 पर जारी इन कार्यवाही के कार्यवृत्त में, न्यायाधिकरण ने संशोधित शुल्क की पात्रता के बारे में अपने रुख को दोहराया। न्यायाधिकरण ने यह भी कहा कि सत्र को साढ़े चार घंटे के लिए यानी दोपहर 3:30 बजे से रात 8 बजे के बीच एक पूर्ण सत्र माना जाएगा। पक्षों को 10 वीं आभासी बैठक से संशोधित शुल्क का भुगतान करने का निर्देश दिया गया था, जो पिछली सुनवाई के लिए भी प्रभावी था। न्यायाधिकरण ने आगे कहा कि यह ज्ञात नहीं है कि यह अदालत कब अपना निर्णय देगी और वर्तमान न्यायाधिकरण पर उक्त निर्णय के लागू होने के बारे में भी संदेह जताया।

4. एफ़कॉन्स ने अपने दिनांकित ई-मेल 28.07.2022 द्वारा चेन्नई मेट्रो को सूचित किया कि उसने अंतिम सुनवाई (यानी 10 वीं से 14 वीं आभासी सुनवाई के लिए) के लिए संशोधित शुल्क का भुगतान कर दिया है। इसलिए चेन्नई मेट्रो ने मद्रास उच्च न्यायालय के समक्ष 10.08.2022 पर एक आवेदन का नेतृत्व किया। धारा 14 के तहत इस कार्यवाही में, मांगी गई राहत एक घोषणा थी कि न्यायाधिकरण के आदेश (जिसके सदस्यों को चौथे उत्तरदाताओं के बाद दूसरे के रूप में शामिल किया गया था, जिसे इसके बाद सामूहिक रूप से "न्यायाधिकरण" के रूप में संदर्भित किया गया था) को संदर्भित विवादों के संबंध में समाप्त कर दिया गया था। इन कार्यवाहियों में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि एक पक्ष द्वारा विवादित बड़ी हुई राशि के भुगतान ने चेन्नई मेट्रो को "बंद" कर दिया।

एक शर्मनाक स्थिति और याचिकाकर्ता को पूर्वाग्रह का कारण बनती है और एल. डी. द्वारा निष्पक्ष तरीके से व्यवहार नहीं किया जाता है। मध्यस्थ न्यायाधिकरण, जिसके परिणामस्वरूप एल. डी. माध्यमस्थ न्यायाधिकरण न्यायिक रूप से आवश्यकतानुसार अपने कार्यों को करने में असमर्थ हो जाएगा।" 1

1 अधिनियम की धारा 14 और 15 के तहत उच्च न्यायालय के समक्ष चेन्नई मेट्रो के नेतृत्व में दायर याचिका के अनुसार।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

5. 15.09.2022 पर, न्यायाधिकरण के सभी तीन सदस्यों ने धारा 14 की याचिका के जवाब में यह स्वीकार करते हुए कि इस अदालत का

ओ. एन. जी. सी. बनाम ए. एफ. सी. ओ. एन. एस. गुनासा जे. वी. 2 (इसके बाद "ओ. एन. जी. सी.") में निर्णय दिया गया।

30.08.2022 ने इस मुद्दे का फैसला किया था और इस प्रकार न्यायाधिकरण के सदस्यों ने मूल रूप से सहमत शुल्क यानी ₹ 1,00,000 पर वापस जाने का फैसला किया। समान शब्दों में, न्यायाधिकरण के सदस्यों ने कहा कि आदेश किसी भी पक्ष के लिए कोई पूर्वाग्रह पैदा नहीं करेंगे और वे इस बात पर सहमत थे कि वे विवाद का फैसला करने में स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से अपने कर्तव्य का निर्वहन करना जारी रखेंगे और पक्षों को कोई आशंका नहीं होनी चाहिए। एफकॉन्स ने भी आवेदन का विरोध किया। शुरू में, उच्च न्यायालय ने कार्यवाही पर रोक लगाते हुए एक अंतरिम आदेश दिया।³ हालांकि, पक्षों के वकील को सुनने के बाद, और रिकॉर्ड पर सामग्री पर विचार करने के बाद, अदालत ने चेन्नई मेट्रो के नेतृत्व में विवादित फैसले के माध्यम से आवेदन को खारिज कर दिया।

चेन्नई मेट्रो के विवाद

6. विद्वान अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल श्री एन. वेंकटरमन (जिसे इसके बाद "ए. एस. जी." के रूप में संदर्भित किया गया है) और श्री रितिन राय ने तर्क दिया कि विवादित पक्षों में से किसी एक के विरोध या आपत्तियों के बावजूद न्यायाधिकरण द्वारा शुल्क में एकतरफा वृद्धि कानून में अस्वीकार्य है, जो न्यायाधिकरण को इस आरोप के संपर्क में लाता है कि उनके निष्पक्ष बने रहने के बारे में उचित आधार उत्पन्न होते हैं। रिलायंस को ओ. एन. जी. सी. (ऊपर) में इस अदालत के फैसले पर रखा गया था। उस फैसले में अदालत ने इस बात पर जोर दिया था कि मध्यस्थता का पूरा दर्शन पक्ष की स्वायत्तता पर आधारित है; इस प्रकार पक्षकार मध्यस्थ को देय शुल्क चुकाने के लिए स्वतंत्र हैं। इसके अलावा, और महत्वपूर्ण रूप से अदालत ने इस बात पर जोर दिया था कि एक बार अनुबंध की शर्तों को लागू करने के बाद न्यायाधिकरण के लिए शुल्क में या उन शीर्षों में बदलाव करने का अधिकार नहीं है जिनके तहत शुल्क लिया जा सकता है। यह आग्रह किया गया कि इस अदालत ने फैसला सुनाया कि मूल शर्तों से कोई भी विचलन, [जो पक्षों और न्यायाधिकरण के बीच एक त्रिपक्षीय व्यवस्था के रूप में हैं], का मतलब है कि कोई भी संशोधन या संशोधन केवल सभी पक्षों की सहमति से हो सकता है; यह एकतरफा नहीं हो सकता है। एसजी ने ओएनजीसी (उपरोक्त) में विभिन्न टिप्पणियों पर भरोसा किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि

2 2022 (10) एससीआर 660

3 ए. सं. 3566/2022 में दिनांकित 25.08.2022 के अंतरिम आदेश द्वारा।

1001

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफ़कॉन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1002

उच्च न्यायालय ने विवादित आदेश द्वारा निर्णय के कुछ हिस्सों पर चुनिंदा रूप से विचार करने में गलती की। यह प्रस्तुत किया जाता है कि आकस्मिक रूप से की गई टिप्पणियाँ इस न्यायालय के अनुपात का आधार नहीं बन सकती हैं।

7. विद्वान ए. एस. जी. ने अन्य निर्णयों पर भरोसा किया जैसे कि पश्चिम बंगाल राज्य बनाम शिवानंद पाठक 4 जहां यह माना गया था कि पूर्वाग्रह के कई रूप हैं जिनमें न्यायिक जिद्दीपन शामिल है। इसी तरह, उन्होंने एन. के. पर भरोसा किया।

बाजपेयी बनाम भारत संघ 5, पंजाब राज्य बनाम देवेंद्रपाल सिंह भुल्लर 6 और सुप्रीम कोर्ट के वकील ऑन रिकॉर्ड एसोसिएशन बनाम भारत संघ 7,

पक्षपात के विभिन्न रूपों या प्रमुखों को विस्तृत करना। ए. एस. जी. के अनुसार, इस मामले के तथ्य पक्षपात के सिद्धांत को संतुष्ट करते हैं और आकर्षित करते हैं। चेन्नई मेट्रो द्वारा विरोध के बावजूद, न्यायाधिकरण के इस आग्रह से कि वह कार्यवाही जारी रखेगा और अधिक राशि वसूल करेगा, जो दोनों पक्षों द्वारा सहमत नहीं थी, पक्षपात की एक उचित आशंका पैदा हुई जो कार्यवाही की जड़ में जाती है।

8. यह प्रस्तुत किया गया था कि चेन्नई मेट्रो को यह तर्क देते हुए न्यायसंगत ठहराया गया है कि कार्यवाही या परिणाम का संचालन नहीं किया जाएगा और इसे निष्पक्ष दिमाग से किया जाएगा। यह तर्क दिया गया था कि विवादित निर्णय त्रुटिपूर्ण है क्योंकि उसने न्यायाधिकरण के सदस्यों के बयानों को स्वीकार किया था और इसमें निहित बयानों को स्वीकार किया था, [जिन्होंने कहा था कि कोई पूर्वाग्रह नहीं होगा, और वे निष्पक्ष रूप से कार्यवाही का संचालन करेंगे]। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि क्या पक्षपात की कोई उचित आशंका है या परिस्थितियां मौजूद हैं कि मध्यस्थ के आचरण से न्यायसंगत संदेह पैदा हुए हैं कि उसके या उसके कार्यवाही के आचरण का पक्षपात नहीं होना एक व्यक्तिपरक बयान पर आधारित नहीं है, बल्कि आवेदन है।

एक वस्तुनिष्ठ परीक्षण का जो यह है कि- 'क्या परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि तथ्यों को उचित रूप से ध्यान में रखते हुए एक उचित व्यक्ति यह निष्कर्ष निकालेगा कि पूर्वाग्रह मौजूद है'।

9. यह प्रस्तुत किया गया था कि न्यायाधिकरण ने इस तथ्य को भी रोक दिया और दबा दिया कि सदस्यों को एफ़कॉन्स से संशोधित शुल्क का भुगतान प्राप्त हुआ था

4 (1998) 5 एस. सी. सी. 513 5 (2012) 4 एस. सी. सी. 653 6 (2011) 14 एस. सी. सी. 770 7 (2016) 5 एस. सी. सी. 808

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

25.07.2022 पर। यह एक और पहलू है जिसे उच्च न्यायालय द्वारा विधिवत नोट किया जाना चाहिए था। न्यायाधिकरण के सदस्यों के इस आचरण और इस बात पर जोर देने की दृढ़ता कि अधिक शुल्क का भुगतान किया जाना चाहिए-और पिछली अवधि के लिए भी, किसी भी उचित व्यक्ति को

यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करेगा कि पक्षपात या पूर्वाग्रह की वास्तविक संभावना थी और न्यायाधिकरण अपनी कार्यवाही को निष्पक्ष तरीके से संचालित नहीं करेगा।

10. यह आगे प्रस्तुत किया गया कि उच्च न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित करने में गलती की कि शुल्क का भुगतान न करने का मुद्दा केवल एक अस्थायी घटना थी। एएसजी ने आगे आग्रह किया कि न्यायाधिकरण द्वारा अपने पहले के रुख को उलटने से चेन्नई मेट्रो की इस आशंका को दूर नहीं किया गया कि कार्यवाही निष्पक्ष तरीके से नहीं की जाएगी, या परिणाम केवल विवाद के गुण-दोष पर वस्तुनिष्ठ विचार पर आधारित नहीं हो सकता है। यह प्रस्तुत किया गया था कि इन तथ्यों के बावजूद न्यायाधिकरण को कार्यवाही जारी रखने की अनुमति देना एक गलत मिसाल कायम करेगा।

11. विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि निर्णय इस पर निर्भर करते हैं

प्रत्यर्थी एफकॉन्स जो एच. आर. डी. निगम बनाम भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड 8 (इसके बाद "एच. आर. डी".) और भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड बनाम यूनाइटेड टेलीकॉम लिमिटेड 9 (इसके बाद "भारत ब्रॉड बैंड") हैं, इस हद तक कि

धारा 14 के तहत आवेदन तब तक बनाए रखने योग्य नहीं है जब तक कि पक्ष पहली बार में न्यायाधिकरण में आवेदन नहीं करता है, लागू नहीं होता है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि यह एक स्पष्ट मामला था जिसमें वस्तुतः और वैधानिक रूप से, न्यायाधिकरण के सदस्यों के आचरण ने उनके जनादेश को समाप्त कर दिया था।

एफकॉन्स के विवाद

12. श्री डेरियस जे. कम्भट्टा ने अदालत से विवादित आदेश में हस्तक्षेप नहीं करने का आग्रह किया। यह प्रस्तुत किया गया था कि धारा 14 के तहत आवेदन बनाए रखने योग्य नहीं था; वकील ने धारा 14 की प्रयोज्यता पर ए. एस. जी. के साथ मुद्दे में शामिल हो गए।

13. इस बात पर प्रकाश डाला गया कि [अधिनियम की सातवीं अनुसूची] के साथ पठित धारा 12 (5) अयोग्यता के विशिष्ट उदाहरणों को संबोधित करने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है और यदि किसी मध्यस्थ को केवल उन आधारों पर चुनौती दी जाती है, तो पक्ष धारा 14 के तहत सीधे अदालत का रुख कर सकते हैं। द.

8 2017 (11) एससीआर 857 9 (2019) 6 एससीआर 97 1003

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफ़कॉन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1004

दूसरी ओर पाँचवीं अनुसूची की सामग्री [धारा 12 (1) के स्पष्टीकरण के साथ पठित] उन संबंधों की एक सूची प्रदान करती है जो नियुक्ति के समय और आगे, धारा 12 (2) द्वारा प्रकटीकरण की आवश्यकता वाले समर्थ आधारों को न्यायसंगत बना सकते हैं। यह तर्क दिया जाता है कि इस सूची में आई. बी. ए. 10 दिशानिर्देशों से "नारंगी" और "लाल" सूचियाँ शामिल हैं। लगभग 19 वस्तुओं के

ओवरलैप के बारे में कोई संदेह नहीं है जो सबसे गंभीर प्रकार के हैं। यदि परिस्थितियाँ उन गिने गए 19 मदों (सातवीं अनुसूची में) के भीतर आती हैं तो पीड़ित पक्ष धारा 14 के तहत सीधे अदालत का दरवाजा खटखटा सकता है; जबकि अन्य मामलों में ऐसा नहीं है। विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि न्यायाधिकरण की निष्पक्षता पर संदेह करने के लिए उचित कारण की अन्य सभी परिस्थितियाँ धारा 12 (3) के दायरे में आती हैं। ऐसे मामलों में उपाय धारा 13 (2) के तहत न्यायाधिकरण से संपर्क करना है और यदि कोई सफलता नहीं मिलती है, तो अधिनियम की धारा 34 के तहत प्रतिकूल होने पर पुरस्कार को चुनौती दें।

14. विद्वान वरिष्ठ वकील ने एच. आर. डी. (उपरोक्त) में इस अदालत की टिप्पणियों पर भरोसा किया, जिसमें उन्होंने कहा कि धारा 12 (5) को सातवीं अनुसूची के साथ पढ़ा जाता है, जो मध्यस्थ को अयोग्य बनाता है और ऐसी स्थिति में वह धारा 14 (1) (ए) के तहत अपने कार्यों को करने में असमर्थ है। दूसरी ओर, यदि आधार वे हैं जो स्वतंत्रता या निष्पक्षता के संबंध में पाँचवीं अनुसूची में गिने गए हैं, तो इसका निर्णय न्यायाधिकरण द्वारा तथ्य के रूप में किया जाना है। यदि असफल रहता है, तो यह धारा 34 के तहत धारा 13 (5) के आधार पर चुनौती का आधार बन जाता है। विद्वान वकील ने भारत ब्रॉडबैंड (उपरोक्त) में टिप्पणियों पर भी भरोसा किया, जो मानते हैं कि धारा 12 (5) एक नया प्रावधान है।

15. ए. एस. जी. की इन दलीलों का खंडन करते हुए कि दो शब्दों "पक्षपात और निष्पक्षता" के बीच अंतर है, यह प्रस्तुत किया गया था कि पक्षपात पक्षपात का पर्याय है और इसलिए निष्पक्षता की अवधारणा का विरोध करता है। यदि कोई व्यक्ति पक्षपाती है, तो उसे स्वतः ही निष्पक्ष नहीं माना जा सकता है। पक्षपात और निष्पक्षता दोनों ही विनिमेय हैं, और दोनों के लिए अंतर्निहित आधार एक पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण का अस्तित्व है जो निष्पक्षता के मौलिक सिद्धांत के विपरीत है। विद्वान वकील इंगित करते हैं कि चेन्नई मेट्रो द्वारा अपनी धारा 14 याचिका में उपयोग की गई अभिव्यक्ति केवल "निष्पक्ष" है।

10 इंटरनेशनल बार एसोसिएशन

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

16. यह बताया गया है कि दो अन्य संदर्भों में, न्यायाधिकरण के सदस्यों ने पक्षों को 09.11.2020 और 15.09.2021 पर संशोधित शुल्क का भुगतान करने का निर्देश दिया था। एफकॉन्स और चेन्नई मेट्रो दोनों ने संशोधित शुल्क का भुगतान किया। यह प्रस्तुत किया गया था कि अन्य मध्यस्थता (यू. ए. ए.-01 संदर्भ आई. ए.) में न्यायाधिकरण का दिनांकित आई. डी. 2 का आदेश और इसका दिनांकित आई. डी. 1 और यू. ए. ए.-05 (संदर्भ आई. ए.) का आदेश और वर्तमान मामले में इसका आदेश इन तथ्यों को प्रदर्शित करता है। विद्वान वकील ने कहा कि इस आधार पर, संशोधित शुल्क का भुगतान करने में चेन्नई मेट्रो के पिछले आचरण को ध्यान में रखते हुए, एफकॉन्स ने चेन्नई मेट्रो को 28.07.2022 दिनांकित ई-मेल द्वारा सूचित किया कि उन्होंने वर्तमान मामले में संशोधित शुल्क

का भुगतान किया है। अंत में यह तर्क दिया गया कि पूर्वाग्रह स्थापित करने की सीमा बहुत अधिक है; निर्भरता।

अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण बनाम के. डी. बाली और अन्य 11 पर रखा गया था, जहाँ यह रेखांकित किया गया था कि पक्षपात की वास्तविक संभावना होनी चाहिए न कि केवल पूर्वाग्रह का संदेह।

कानूनी प्रावधान

17. 2015 और 2019 में इसके संशोधनों के बाद अधिनियम के प्रासंगिक प्रावधान इस प्रकार हैं:

“12. चुनौती के लिए आधार।—[(1) जब किसी व्यक्ति से मध्यस्थ के रूप में उसकी संभावित नियुक्ति के संबंध में संपर्क किया जाता है, तो वह किसी भी परिस्थिति में लिखित रूप में खुलासा करेगा -

(क) जैसे कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, किसी भी पक्ष के साथ या किसी भी विवादग्रस्त विषय के संबंध में किसी भी पूर्व या वर्तमान संबंध या हित का अस्तित्व, चाहे वह वित्तीय, व्यवसाय, व्यावसायिक या अन्य प्रकार का हो, जिससे उसकी स्वतंत्रता या निष्पक्षता के बारे में न्यायसंगत संदेह पैदा होने की संभावना है; और

(ख) जो मध्यस्थता के लिए पर्याप्त समय देने की उसकी क्षमता और विशेष रूप से बारह महीने की अवधि के भीतर संपूर्ण मध्यस्थता को पूरा करने की उसकी क्षमता को प्रभावित करने की संभावना है।

स्पष्टीकरण 1.—पाँचवीं अनुसूची में बताए गए आधार यह निर्धारित करने में मार्गदर्शन करेंगे कि क्या ऐसी परिस्थितियाँ मौजूद हैं जो मध्यस्थ की स्वतंत्रता या निष्पक्षता के बारे में न्यायसंगत संदेह पैदा करती हैं।

11 1988 (3) एसडब्ल्यूडब्ल्यूसीआर 370 1005

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफकॉन्स (जेवी) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1006 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 14 एस. सी. आर.

स्पष्टीकरण 2.—प्रकटीकरण ऐसे व्यक्ति द्वारा छठी अनुसूची में निर्दिष्ट प्रपत्र में किया जाएगा।]

(3) एक मध्यस्थ को केवल तभी चुनौती दी जा सकती है जब -

(क) ऐसी परिस्थितियाँ मौजूद हैं जो उसकी स्वतंत्रता या निष्पक्षता के बारे में न्यायोचित संदेह पैदा करती हैं, या

(ख) उसके पास पक्षकारों द्वारा सहमत योग्यताएं नहीं हैं।(4) एक पक्ष अपने द्वारा नियुक्त मध्यस्थ को चुनौती दे सकता है, या जिसकी नियुक्ति में उसने भाग लिया है, केवल उन्हीं कारणों से जिसके लिए वह नियुक्ति के बाद जागरूक हो जाता है।

(5) इसके विपरीत किसी भी पूर्व समझौते के बावजूद, कोई भी व्यक्ति जिसका संबंध, पक्षों या वकील या विवाद के विषय के साथ, सातवीं अनुसूची में निर्दिष्ट किसी भी श्रेणी के अंतर्गत आता है, मध्यस्थ के रूप में नियुक्त होने के लिए अयोग्य होगा:

बशर्ते कि पक्षकार, अपने बीच उत्पन्न हुए विवादों के बाद, लिखित में एक स्पष्ट समझौते द्वारा इस उप-धारा की प्रयोज्यता को माफ कर सकते हैं।

13. चुनौती प्रक्रिया।—(1) उप-धारा (4) के अधीन, पक्षकार एक मध्यस्थ को चुनौती देने की प्रक्रिया पर सहमत होने के लिए स्वतंत्र हैं।(2) उप-धारा (1) में निर्दिष्ट किसी समझौते में विफल रहने पर, एक पक्ष जो एक मध्यस्थ को चुनौती देने का इरादा रखता है, वह मध्यस्थ न्यायाधिकरण के गठन के बारे में जागरूक होने के पंद्रह दिनों के भीतर या धारा 12 की उप-धारा (3) में निर्दिष्ट किसी भी परिस्थिति से अवगत होने के बाद, मध्यस्थ न्यायाधिकरण को चुनौती देने के कारणों का एक लिखित विवरण भेजेगा।

(3) जब तक उप-धारा (2) के तहत चुनौती दिया गया मध्यस्थ अपने कार्यालय से वापस नहीं लेता है या दूसरा पक्ष चुनौती के लिए सहमत नहीं होता है, तब तक मध्यस्थ न्यायाधिकरण चुनौती पर निर्णय लेगा।

(4) यदि पक्षकारों द्वारा सहमत किसी प्रक्रिया के तहत या उप-धारा (2) के तहत प्रक्रिया के तहत कोई चुनौती सफल नहीं होती है, तो मध्यस्थ न्यायाधिकरण मध्यस्थता कार्यवाही जारी रखेगा और मध्यस्थता पुरस्कार देगा।

(5) जहां उप-धारा (4) के तहत एक मध्यस्थता पुरस्कार दिया जाता है, मध्यस्थ को चुनौती देने वाला पक्ष धारा 34 के अनुसार ऐसे मध्यस्थता पुरस्कार को अलग करने के लिए आवेदन कर सकता है।

(6) जहां उप-धारा (5) के तहत किए गए आवेदन पर मध्यस्थता पुरस्कार को अलग रखा जाता है, वहां न्यायालय यह निर्णय ले सकता है कि जिस मध्यस्थ को चुनौती दी गई है वह किसी भी शुल्क का हकदार है या नहीं।

14. कार्य करने में विफलता या असंभवता।—(1) [एक मध्यस्थ का अधिदेश समाप्त हो जाएगा और उसे किसी अन्य मध्यस्थ द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, यदि]-(ए) वह न्यायिक रूप से या वास्तविक रूप से अपने कार्यों को करने में असमर्थ हो जाता है या अन्य कारणों से अनुचित देरी के बिना कार्य करने में विफल रहता है; और

(ख) वह अपने पद से हट जाता है या पक्ष उसके जनादेश को समाप्त करने के लिए सहमत हो जाते हैं।

(2) यदि उप-धारा (1) के खंड (क) में निर्दिष्ट किसी भी आधार के संबंध में कोई विवाद बना रहता है, तो कोई पक्षकार, जब तक कि पक्षकारों द्वारा अन्यथा सहमति न हो जाए, जनादेश की समाप्ति पर निर्णय लेने के लिए न्यायालय में आवेदन कर सकता है।

(3) यदि, इस धारा या धारा 13 की उप-धारा (3) के तहत, कोई मध्यस्थ अपने पद से हट जाता है या कोई पक्ष मध्यस्थ के अधिदेश को समाप्त करने के लिए सहमत होता है, तो इसका अर्थ इस धारा या धारा 12 की उप-धारा (3) में निर्दिष्ट किसी भी आधार की वैधता की स्वीकृति नहीं होगी।

15. अधिदेश की समाप्ति और मध्यस्थ का प्रतिस्थापन।— (1) में।

धारा 13 या धारा 14 में निर्दिष्ट परिस्थितियों के अतिरिक्त, मध्यस्थ का अधिदेश समाप्त हो जाएगा -

(क) जहाँ वह किसी भी कारण से कार्यालय से हट जाता है; या (ख) पक्षों की सहमति से या उसके अनुसार।

(2) जहाँ एक मध्यस्थ का अधिदेश समाप्त हो जाता है, वहाँ एक स्थानापन्न मध्यस्थ की नियुक्ति उन नियमों के अनुसार की जाएगी जो मध्यस्थ की नियुक्ति के लिए लागू थे।[.....]”

1007

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफकॉन्स (जेवी) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1008 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 14 एस. सी. आर.

विश्लेषण और तथ्य

18. पक्षपात (एक अभिव्यक्ति जिसे अधिनियम ने जानबूझकर टाल दिया है; इसके बजाय

उपयोग किया गया शब्द एक मध्यस्थ की निष्पक्षता के बारे में न्यायसंगत संदेह है)

यह कई पहलुओं वाली एक अभिव्यक्ति है: विषय वस्तु पूर्वाग्रह; आर्थिक पूर्वाग्रह और

व्यक्तिगत पूर्वाग्रह।¹² इसे एक पक्ष के पक्ष या विपक्ष में निर्णय लेने की प्रवृत्ति के रूप में भी वर्णित किया गया है, विवाद के सही गुणों को उचित रूप से ध्यान में रखे बिना पूर्वाग्रह है। उस प्रवृत्ति की उचित आशंका होनी चाहिए।” 13 जी. एन. नायक बनाम गोवा विश्वविद्यालय 14 में यह भी आयोजित किया गया है कि:

“पक्षपात को आम तौर पर आंशिक या वरीयता के रूप में माना जा सकता है। यह सच है कि किसी न्यायिक या अर्ध-न्यायिक मामले में कार्य करने के लिए आवश्यक किसी भी व्यक्ति या प्राधिकरण को निष्पक्ष रूप से कार्य करना चाहिए।”

19. एस. पार्थसारथी बनाम आंध्र प्रदेश राज्य (इसके बाद,

“पार्थसारथी”) 15 इस न्यायालय ने कहा कि:

“‘वास्तविक संभावना’ और उचित संदेह ‘के परीक्षण वास्तव में एक दूसरे के साथ असंगत हैं। हम समझते हैं कि समीक्षा करने वाले प्राधिकारी को अपने समक्ष मौजूद पूरे साक्ष्य के आधार पर यह निर्धारण करना चाहिए कि क्या एक उचित व्यक्ति परिस्थितियों में यह निष्कर्ष निकालेगा कि पक्षपात की वास्तविक संभावना है। अदालत को इस धारणा को देखना चाहिए कि अन्य लोगों की क्या धारणा है।”

बाद में, कुमाऊं विकास मंडल बनाम गिरिजा शंकर पंत (इसके बाद,

“कुमाऊं विकास मंडल”) 16 अदालत ने पार्थसारथी (ऊपर) में ली गई स्थिति से सहमत होते हुए इस अदालत की निम्नलिखित टिप्पणियों पर भरोसा किया।

पार्थसारथी में (ऊपर): “यदि सही सोच वाले व्यक्ति सोचेंगे कि पूछताछ करने वाले अधिकारी की ओर से पक्षपात की वास्तविक संभावना है, तो उन्हें जांच का संचालन नहीं करना चाहिए; फिर भी, पक्षपात की वास्तविक संभावना होनी चाहिए। अनुमान या अनुमान पर्याप्त नहीं होंगे। परिस्थितियाँ होनी चाहिए

12 जी. सरना बनाम लखनऊ विश्वविद्यालय और अन्य, 1977 (1) एससीआर 64

13 सरकार के सचिव, परिवहन विभाग।, मद्रास बनाम मुनुसामी मुदलियार और

एन. आर. 1988 (पूरक) (2) एससीआर 673 14 2002 (1) एससीआर 636

15 1974 (1) एससीआर 697

16 2000 पूरक (4) एस. सी. सी. 248

जिनसे समझदार लोग सोचेंगे कि यह संभावित या संभावित है कि पूछताछ करने वाला अधिकारी पूर्वाग्रहग्रस्त होगा।”

अदालत [कुमाऊं विकास मंडल (ऊपर) में], उसी समय,

उन कारकों को अस्वीकार करने या सूचीबद्ध करने की निरर्थकता पर टिप्पणी की जो पूर्वाग्रह के वास्तविक खतरे को जन्म दे सकते हैं या नहीं भी दे सकते हैं।”

अन्य महत्वपूर्ण निर्णय, जिसने चर्चा को समृद्ध किया है

पक्षपात की एक उचित आशंका क्या हो सकती है, यह है रंजीत ठाकुर बनाम भारत संघ 17:

“पक्षपात की वास्तविक संभावना का परीक्षण यह है कि क्या प्रासंगिक जानकारी रखने वाले एक उचित व्यक्ति ने सोचा होगा कि पक्षपात की संभावना थी और क्या प्रतिवादी 4 को केवल एक विशेष तरीके से मामले का निर्णय लेने के लिए निपटाया जाने की संभावना थी।

[.....]

पक्षपात की संभावना के परीक्षणों के संबंध में जो प्रासंगिक है वह पार्टी के मन में उस संबंध में आशंका की तर्कसंगतता है। भारतीय न्यायाधीश के लिए उचित दृष्टिकोण यह नहीं है कि वह अपने मन को देखे और खुद से पूछे, हालांकि, ईमानदारी से, “क्या मैं पक्षपाती हूँ?”; लेकिन उनके सामने पार्टी के दिमाग को देखने के लिए।”

(जोर दिया गया)

20. पक्षपात के मुद्दे पर सबसे महत्वपूर्ण फैसलों में से एक था

आर. वी. में प्रस्तुत किया गया बो स्ट्रीट मेट्रोपॉलिटन वजीफा मजिस्ट्रेट, पूर्व पी

पिनोचेट उगार्ते (नंबर 2) 18. अदालत ने न्यायशास्त्र और कई पिछले उदाहरणों की समीक्षा की, और कुमाऊं विकास मंडल (ऊपर) में कहा गया है:

“इसलिए, परीक्षण यह है कि क्या केवल पक्षपात की आशंका है या पक्षपात का वास्तविक खतरा है और इसी आधार पर आसपास की परिस्थितियों को इकट्ठा किया जाना चाहिए और उनसे आवश्यक निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए-इस स्थिति में हालांकि निष्कर्ष अन्यथा अपरिहार्य है कि पूर्वाग्रह का एक वास्तविक खतरा मौजूद है।

17 1988 (1) एस. सी. आर. 512 18 [2000] 1 ए. सी. 119 1009

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफ़कॉन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1010

21. वर्तमान मामले पर लौटते हुए, अधिनियम की धारा 12 (1) नियुक्ति के स्तर पर लागू होती है-जो मध्यस्थों पर लागू प्रकटीकरण आवश्यकताओं को अनिवार्य करती है; (ए) उन प्रकार के प्रवाह को निर्धारित करती है जो 'स्वतंत्रता और निष्पक्षता' के बारे में 'न्यायसंगत संदेह' पैदा कर सकते हैं; धारा 12 (1) (बी) मध्यस्थ की 'पर्याप्त समय देने' की क्षमता के संबंध में प्रकटीकरण आवश्यकता को निर्धारित करती है। स्पष्टीकरण (1) संभावित टकराव के आधारों को संदर्भित करता है, जिन्हें प्रकट करने की आवश्यकता है: उन्हें अधिनियम की धारा 34 के तहत अलग-अलग शीर्षों के तहत गिना गया है, और अधिनियम की पांचवीं अनुसूची में सात व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। धारा 12 (1) के दूसरे स्पष्टीकरण में छठी अनुसूची में निर्धारित प्रपत्र में प्रकटीकरण की आवश्यकता है।

22. धारा 12 (2) किसी भी घटना या परिस्थिति के प्रकटीकरण की अपेक्षा करती है जिसे अनिवार्य रूप से पक्षों के साथ साझा किया जाना है-यदि ऐसी परिस्थितियाँ नियुक्ति के बाद उत्पन्न होती हैं।

धारा 12 (3) एक मध्यस्थ को चुनौती देने का आधार बताती है यदि उसकी "स्वतंत्रता या निष्पक्षता" के संबंध में "न्यायसंगत संदेह" मौजूद हैं। धारा 12 (4) पक्षों द्वारा चुनौती को प्रतिबंधित करती है-इसके बाद

नियुक्ति "केवल उन कारणों से की जाती है जिनके बारे में नियुक्ति के बाद उसे पता चलता है।"

23. धारा 12 (5) को डब्ल्यू. ई. एफ. 23.10.2016 में डाला गया था। यह एक से शुरू होता है

गैर-अस्थाई खंड जो किसी भी "विपरीत पूर्व समझौते" को ओवरराइड करता है और

यह निर्धारित करता है कि सातवीं अनुसूची में निर्धारित किसी भी प्रकार के संबंध वाला कोई भी व्यक्ति (जो 19 विशिष्ट प्रमुखों और संबंधों के प्रकारों को रेखांकित करता है-पेशेवर, परिचित या सहयोगी) मध्यस्थ के रूप में नियुक्ति के लिए अयोग्य होगा। धारा 12 (5) का प्रावधान पक्षों को लिखित रूप में स्पष्ट समझौते द्वारा धारा 12 (5) (सातवीं अनुसूची के साथ पठित) के तहत अयोग्यता की शर्तों को माफ करने में सक्षम बनाता है।

24. धारा 13 (1) चुनौती प्रक्रिया से संबंधित है और पक्षों को मध्यस्थ को चुनौती देने की प्रक्रिया पर सहमत होने में सक्षम बनाती है। धारा 13 (2) द्वारा, यदि कोई समझौता नहीं है, तो मध्यस्थ को चुनौती देने का इरादा रखने वाले पक्ष को न्यायाधिकरण के गठन के बारे में जागरूक होने के 15 दिनों के भीतर या धारा 12 (3) में निर्दिष्ट किसी भी परिस्थिति से अवगत होने के बाद पंद्रह दिनों के भीतर न्यायाधिकरण को चुनौती देने के कारणों के लिए लिखित रूप में आवेदन करना होगा। धारा 12 (3), जैसा कि पहले देखा गया है, बताती है कि परिस्थितियों के अस्तित्व को चुनौती देने के आधार, जो न्यायाधिकरण की स्वतंत्रता या निष्पक्षता के बारे में न्यायसंगत संदेह को जन्म देते हैं। धारा 13 (3) में कहा गया है कि यदि मध्यस्थ ऐसा करता है

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

वापस नहीं लेता है या दूसरा पक्ष चुनौती के अनुसार दूसरे पक्ष के सहमत होने की अनुपस्थिति में नहीं करता है; न्यायाधिकरण को इस पर निर्णय लेना है। धारा 13 (4) द्वारा यदि चुनौती असफल होती है तो न्यायाधिकरण कार्यवाही जारी रखेगा और अपने निर्णय को रद्द कर देगा। धारा 13 (5) में कहा गया है कि धारा 34 के तहत निर्णय दिए जाने के बाद कोई भी पक्ष मध्यस्थ के फैसले को चुनौती दे सकता है। धारा 13 (6) मध्यस्थ को देय शुल्क के मुद्दे को खुला रखती है, यदि निर्णय धारा 13 (5) के तहत आधार पर अलग रखा जाता है।

25. धारा 14 मध्यस्थ या न्यायाधिकरण के कार्य करने में विफलता या असंभवता की आकस्मिकता से संबंधित है और यह निर्धारित करती है कि एक मध्यस्थ का आदेश समाप्त हो जाएगा और उसे दूसरे द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा "यदि वह न्यायिक रूप से या वास्तविक रूप से अपने कार्यों को करने में असमर्थ हो जाता है या अन्य कारणों से अनुचित देरी के बिना कार्य करने में विफल रहता है या अपने कार्यालय से हट जाता है या पक्ष अपने जनादेश की समाप्ति के

लिए सहमत होते हैं। धारा 14 (2) द्वारा यदि धारा 14 (1) में निर्दिष्ट आधारों के संबंध में कोई विवाद बना रहता है, तो पक्षकारों द्वारा अधिदेश पर समाप्ति के मुद्दे पर निर्णय लेने के लिए न्यायालय से संपर्क किया जा सकता है।²⁶ उपरोक्त वैधानिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए उद्धृत निर्णयों पर विचार करना आवश्यक होगा। इस श्रृंखला में पहला होगा

मेसर्स वोएस्टाल्पाइन शियेनन जी. एम. बी. एच. बनाम दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, 19

2015 में अधिनियम में किए गए संशोधन पर ध्यान देते हुए, न्यायालय ने रेखांकित किया कि मध्यस्थों की तटस्थता, विशेष रूप से उनकी स्वतंत्रता और निष्पक्षता को प्रेरित करने के उद्देश्य से 2015 का संशोधन अधिनियम पेश किया गया था। संशोधित प्रावधान उन परिस्थितियों की पहचान करने के लिए अधिनियमित किया गया था जिन्होंने मध्यस्थ की स्वतंत्रता या निष्पक्षता के बारे में न्यायसंगत संदेह को जन्म दिया और यदि उनमें से कोई भी परिस्थिति मौजूद है, तो प्रदान किया गया उपाय धारा 12 के तहत है। अदालत ने विशेष रूप से धारा 12 (5) को रेखांकित किया जिसने इसके विपरीत पूर्व समझौतों को रद्द कर दिया। उस मामले के तथ्यों में, यह अभिनिर्धारित किया गया था कि यदि किसी सलाहकार का किसी पक्ष के साथ कोई पूर्व या वर्तमान व्यावसायिक संबंध था, तो वह मध्यस्थ के रूप में कार्य करने के लिए अयोग्य था।²⁷ अगले मामले एच. आर. डी. (ऊपर) का बारीकी से विश्लेषण करने की आवश्यकता है। न्यायालय ने 2015 के संशोधन की पृष्ठभूमि पर पहले कुछ विस्तार से विचार किया।

19 2017 (1) एससीआर 798 1011

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफ़कॉन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1012 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 14 एस. सी. आर.

इसकी ओर ले जाने वाली परिस्थितियाँ जो विधि आयोग की रिपोर्ट है और अंततः, संशोधन। न्यायालय ने तब स्पष्ट रूप से निम्नलिखित निर्णय दिया:

“15. पाँचवीं और सातवीं अनुसूचियों में दिए गए आधारों की गणना आई. बी. ए. दिशानिर्देशों से ली गई है, विशेष रूप से उनकी लाल और नारंगी सूचियों से। उपरोक्त दिशानिर्देशों में तीन सूचियाँ शामिल हैं। लाल सूची में ऐसी स्थितियाँ शामिल हैं जो "अधिक गंभीर" और "गंभीर" हैं और "अधिक गंभीर" आपत्तियाँ गैर-माफ करने योग्य हैं। दूसरी ओर, ऑरेंज लिस्ट उन स्थितियों की एक सूची है जो मध्यस्थ की निष्पक्षता या स्वतंत्रता के बारे में संदेह पैदा कर सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप मध्यस्थ का कर्तव्य है कि वह ऐसी स्थितियों का खुलासा करे। हरित सूची उन स्थितियों की एक सूची है जहां वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से कोई वास्तविक हितों का टकराव मौजूद नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप मध्यस्थ का प्रकटीकरण का कोई कर्तव्य नहीं है। ये दिशानिर्देश पहली बार वर्ष 2004 में पेश किए गए थे और इसके बाद दुनिया भर में मध्यस्थता के अनुभव को देखने के बाद इनमें संशोधन किया गया है। इसके भाग 1 में निष्पक्षता, स्वतंत्रता और प्रकटीकरण के संबंध में सामान्य मानक निर्धारित किए गए हैं।

17. यह ध्यान दिया जाएगा कि पाँचवीं अनुसूची की मदें 1 से 19 सातवीं अनुसूची में उल्लिखित मदों के समान हैं। पाँचवीं अनुसूची में भी इन मदों के प्रकट होने का एकमात्र कारण मध्यस्थ द्वारा प्रकटीकरण के प्रयोजनों के लिए है, क्योंकि जब तक प्रस्तावित मध्यस्थ पाँचवीं अनुसूची की मदों 1 से 34 के संदर्भ में अपनी भागीदारी का लिखित रूप में खुलासा नहीं करता है, तब तक इस तरह के प्रकटीकरण की कमी होगी, जिस स्थिति में पक्षों को नुकसान होगा क्योंकि ऐसी जानकारी अक्सर केवल मध्यस्थ की व्यक्तिगत जानकारी के भीतर होती है। यही कारण है कि ऐसा प्रतीत होता है कि मद 1 से 19 भी पाँचवीं अनुसूची में शामिल हैं।

*****20. हालाँकि, श्री दीवान की इस दलील को स्वीकार करने के लिए कि चूंकि चुनौती के आधार को संकीर्ण कर दिया गया है, इसलिए हमें पाँचवीं और सातवीं अनुसूची में वस्तुओं का सबसे व्यापक तरीके से अर्थ निकालना चाहिए, ताकि पूर्वाग्रह की सबसे दूर की संभावना को दूर किया जा सके।

अनुसूचियों की व्याख्या करने का एक स्वीकार्य तरीका नहीं है। जैसा कि हमारे द्वारा ऊपर बताया गया है, अनुसूचियों में निहित मदों का मूल आई. बी. ए. दिशानिर्देशों से है, जिनका अर्थ उसमें निहित सामान्य सिद्धांतों के आलोक में लगाया जाना है-कि प्रत्येक मध्यस्थ अपनी नियुक्ति को स्वीकार करते समय पक्षकारों से निष्पक्ष और स्वतंत्र होगा। उपरोक्त के बारे में संदेह केवल तभी उचित हो सकते हैं जब प्रासंगिक तथ्यों और परिस्थितियों की जानकारी रखने वाला एक उचित तीसरा व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस बात की संभावना है कि मध्यस्थ अपने निर्णय तक पहुंचने में मामले के गुणों के अलावा अन्य कारकों से प्रभावित हो सकता है। इस परीक्षण के लिए पाँचवीं और सातवीं अनुसूची में बताए गए विषयों के लिए एक व्यापक सामान्य-संवेदनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। इसलिए, इस दृष्टिकोण के लिए इसमें उपयोग किए गए शब्दों के उचित निर्माण की आवश्यकता होगी, न तो उन्हें अनुचित रूप से बड़ा करने या प्रतिबंधित करने की प्रवृत्ति। इन प्रारंभिक टिप्पणियों के साथ ही हम सातवीं अनुसूची की भाषा का अर्थ निकालने में दोनों पक्षों के तर्कों पर विचार करने के लिए आगे बढ़ते हैं।”

28. इस स्तर पर यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण होगा कि अदालत ने एक भेदभाव किया है। सबसे पहले, यह कहा गया है कि नियुक्ति के चरण में, परिस्थितियों के बारे में लिखित रूप में एक प्रकटीकरण किया जाना चाहिए, जिससे न्यायसंगत संदेह पैदा होने की संभावना है, और फिर कहा गया है कि प्रकटीकरण को धारा 13 के साथ धारा 12 (1) से 12 (4) के तहत चुनौती दी जा सकती है। अदालत ने हालांकि इस बात को रेखांकित किया कि अगली श्रेणी में जहां व्यक्ति मध्यस्थ के रूप में नियुक्त होने के लिए अयोग्य हो गया, मध्यस्थ के समक्ष चुनौती देने की कोई आवश्यकता नहीं थी। धारा 12 (5) में उल्लिखित ऐसी परिस्थितियों में, पीड़ित पक्ष धारा 14 (1) (ए) के तहत सीधे

अदालत का रुख कर सकता है। यह भी रेखांकित किया गया कि धारा 12 (5) के तहत सभी मामलों में, कोई चुनौती प्रक्रिया का लाभ नहीं उठाया जाना चाहिए और यदि मध्यस्थ इस तरह से जारी रहता है, तो अपना कार्य करने में असमर्थ होने का आधार क्योंकि वह सातवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भी श्रेणी में आता है, तो संबंधित पक्ष अदालत में आवेदन कर सकता है।

29. इसलिए, यह स्पष्ट है कि अयोग्यता या अयोग्यता के नियम काफी स्पष्ट हैं। नियुक्ति से जुड़ी अयोग्यता पहली श्रेणी है: यह स्पष्टीकरण और अधिनियम की पांचवीं अनुसूची के साथ पठित धारा 12 (1) में निहित है। जैसा कि पहले बताया गया है 1013

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफ़कॉन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1014

इस अनुसूची में 34 विषय हैं। यदि इनमें से कोई भी परिस्थिति मौजूद है, तो मध्यस्थ की नियुक्ति वर्जित है। दूसरी श्रेणी वह है जहां आरंभ में मध्यस्थ पात्र होता है, लेकिन नियुक्ति के बाद पांचवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भी शर्त को लागू करता है या उसके अधीन हो जाता है। उस स्थिति में, पार्टी के लिए यह दावा करना खुला है कि उनकी स्वतंत्रता या निष्पक्षता के बारे में न्यायसंगत संदेह हो सकते हैं। तब भी उपाय यह होगा कि पक्ष को धारा 13 (2) के आधार पर पहला रुख अपनाते हुए मध्यस्थ के पास आवेदन करना होगा। धारा 13 (2) के शब्दों में स्पष्ट किया गया है कि एक पक्ष जो मध्यस्थ को चुनौती देने का इरादा रखता है, कुछ परिस्थितियों से अवगत होने के बाद जो न्यायसंगत संदेह पैदा करती हैं, उस पक्ष को 15 दिनों के भीतर (जागरूक होने के) न्यायाधिकरण से संपर्क करना होगा और निर्णय लेना होगा। यदि पक्ष धारा 13 (4) के तहत सफल नहीं होता है, तो न्यायाधिकरण कार्यवाही जारी रखने के लिए कर्तव्यबद्ध है। जब पुरस्कार दिया जाता है, तो इसे धारा 13 (5) के संचालन द्वारा धारा 34 के तहत चुनौती दी जा सकती है। स्पष्ट रूप से, तब उन स्थितियों के संबंध में लागू होने वाले मूल आधार और प्रक्रिया जहां न्यायसंगत कारण मौजूद हैं या उत्पन्न होते हैं, संदर्भ का निर्णय करने के लिए एक न्यायाधिकरण की पात्रता पर सवाल उठाने के लिए धारा 12 और 13 में उल्लिखित हैं।

30. जैसा कि एच. आर. डी. (उपरोक्त) में स्पष्ट किया गया है, अयोग्यता के आधार जो नियुक्ति चरण में लागू होंगे, धारा 12 (2) के आधार पर कार्यवाही के दौरान भी जारी रहेंगे। दूसरे शब्दों में, यदि कार्यवाही के जारी रहने के दौरान, मध्यस्थ पांचवीं अनुसूची में निहित किसी भी पात्रता शर्त के अधीन हो जाता है, तो उसकी निष्पक्षता और स्वतंत्रता के बारे में उचित संदेह के आधार पर उसे हटाने के लिए आवेदन किया जा सकता है। धारा 12 के साथ पठित धारा 13 (2) में उल्लिखित प्रक्रिया के अनुसार, ऐसी प्रक्रिया का पहले पालन किया जाना चाहिए जिसका अर्थ है कि पक्ष को पहले मध्यस्थ के समक्ष उपस्थित होना चाहिए और उसके बने रहने पर आपत्ति करनी चाहिए। अयोग्यता के मामले में जो नियुक्ति की जड़ है-और यह धारा 12 (5) [जो जोरदार शब्दों में है और अन्य पिछले समझौतों को ओवरराइड करती है] की शुरुआत का परिणाम है, पक्षकारों या वकील के साथ मध्यस्थ का संबंध या विवाद का विषय या सातवीं अनुसूची की किसी भी श्रेणी का अस्तित्व (जो 19 विनिर्दिष्ट आधार हैं) उस न्यायाधिकरण को जारी रखने के लिए भी अयोग्य

बनाता है। एकमात्र अपवाद यह है कि पक्ष उस अयोग्यता को लिखित रूप में स्पष्ट रूप से छूट देता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

धारा 12 (5)। मानव संसाधन विकास (ऊपर) के अनुसार, उस स्थिति में, मध्यस्थ न्यायाधिकरण न्यायिक हो जाता है, जो अपने कार्यों को करने में असमर्थ होता है।

31. मानव संसाधन विकास (उपर्युक्त) में विश्लेषण और भारत ब्रॉड बैंड (उपर्युक्त) में बाद का निर्णय, इसलिए कानून के स्पष्ट प्रतिपादन हैं कि कोई भी कानूनी अक्षमता जो पांचवीं अनुसूची में उल्लिखित आधारों पर संलग्न होती है [या कोई अन्य परिस्थिति, धारा 12 (3) की शब्दावली को देखते हुए जो पांचवीं अनुसूची की अयोग्यता तक सीमित नहीं है], पीड़ित पक्ष को पहले कानून के मामले के रूप में न्यायाधिकरण के समक्ष आवेदन करना होगा। दूसरे शब्दों में, न्यायाधिकरण को पक्ष की आपत्तियों से निपटने और यह तय करने का अवसर दिया जाना चाहिए कि कार्यवाही जारी रखी जाए या नहीं। यह विचार अदालतों और अर्ध-न्यायिक अधिकारियों द्वारा पूर्वाग्रह की उचित आशंका के संदर्भ में दिए गए इस अदालत के फैसलों की लंबी कतार के अनुरूप है, जो मानक लाल बनाम डॉ. प्रेम चंद 20 से शुरू होकर उसी मंच के समक्ष जल्द से जल्द इस मुद्दे को उठाने के लिए है।

32. एच. आर. डी. (ऊपर) और भारत ब्रॉड बैंड (ऊपर) में निर्णय स्पष्ट हैं और इस आशय के लिए कि पक्षपात का मुद्दा जल्द से जल्द उसी न्यायाधिकरण के समक्ष उठाया जाना चाहिए। 15 दिनों की समय सीमा का विज्ञापन उस विचार के वैधानिक समावेश के अलावा और कुछ नहीं है। हालाँकि, जब सातवीं अनुसूची में गिने गए आधार सामने आते हैं या एक पक्ष के ध्यान में लाए जाते हैं, जब तक कि ऐसा पक्ष अपनी आपत्तियों को स्पष्ट रूप से माफ नहीं करता है, तो उस पक्ष के लिए यह कहना वास्तव में पर्याप्त है कि न्यायाधिकरण का जनादेश स्वचालित रूप से समाप्त हो जाता है। पीड़ित पक्ष तब आगे बढ़ सकता है और धारा 14 के तहत कार्यवाही के साथ न्यायाधिकरण की निरंतरता को चुनौती दे सकता है।

33. वर्तमान मामले में, यह न्यायालय इस तथ्य से अवगत है कि ओ. एन. जी. सी. (उपर्युक्त) इस प्रस्ताव के लिए प्राधिकरण है कि शुल्क के निर्धारण का मुद्दा संविदात्मक है, और जहां भी कोई पूर्व व्यवस्था या अदालत का आदेश नहीं है, वहां न्यायाधिकरण को इसे सीमा पर करना होगा। यह व्यवस्था एक त्रिपक्षीय समझौते के माध्यम से की जाती है, जिसका अर्थ है कि सुनवाई की संख्या के आधार पर भुगतान के किसी भी तरीके (विज्ञापन-मान या बैठक शुल्क, या अलग-अलग दरें, या शुल्क वृद्धि के मुद्दे पर विचार करने की अनुमति दी जा रही है।

20 1957 [1] एससीआर 575 1015

न्यायाधिकरण को बाद के चरण में अपने शुल्क को संशोधित करने के लिए), शुल्क की शर्त का कोई भी संशोधन या पुनर्विचार, दोनों प्रतिद्वंद्वी पक्षों और न्यायाधिकरण के परामर्श और समझौते पर आधारित होना चाहिए। ओ. एन. जी. सी. (उपरोक्त) द्वारा बहुमत की राय के माध्यम से दिए गए निर्देशों से यह स्पष्ट है, जिसमें तीसरे न्यायाधीश की भी सहमति है:

“1. [.....]

2. ऐसे मामलों में जहां मध्यस्थ की नियुक्ति पक्षकारों द्वारा मध्यस्थता समझौते में निर्धारित तरीके से की जाती है, मध्यस्थों को देय शुल्क मध्यस्थता समझौते के अनुसार होगा। हालाँकि, यदि मध्यस्थता न्यायाधिकरण मानता है कि मध्यस्थता समझौते में निर्धारित शुल्क अस्वीकार्य है, तो मध्यस्थता न्यायाधिकरण द्वारा प्रस्तावित शुल्क को इन निर्देशों के अनुसार प्रारंभिक सुनवाई के दौरान स्पष्टता के साथ इंगित किया जाना चाहिए। प्रारंभिक सुनवाई में, यदि सभी पक्ष और मध्यस्थ न्यायाधिकरण संशोधित शुल्क के लिए सहमत होते हैं, तो वह शुल्क मध्यस्थ (ओं) को देय होगा। हालाँकि, यदि कोई भी पक्ष मध्यस्थ (ओं) द्वारा प्रस्तावित शुल्क पर आपत्ति उठाता है और ऐसे पक्ष और न्यायाधिकरण या न्यायाधिकरण के सदस्य के बीच कोई सहमति नहीं बन सकती है, तो न्यायाधिकरण या न्यायाधिकरण के सदस्य को असाइनमेंट को अस्वीकार कर देना चाहिए।

3. एक बार जब संदर्भ की शर्तों को लागू कर दिया जाता है और जारी कर दिया जाता है, तो मध्यस्थ न्यायाधिकरण के लिए शुल्क में या उन शीर्षों में बदलाव करने की अनुमति नहीं होगी जिनके तहत शुल्क लिया जा सकता है।

4. पक्षकार और मध्यस्थ न्यायाधिकरण प्रारंभिक सुनवाई के दौरान संदर्भ की शर्तों में एक उत्कीर्णन कर सकते हैं कि उसमें निर्धारित शुल्क को एक विशिष्ट सी बैठकों के पूरा होने पर संशोधित किया जा सकता है। पुनरीक्षण की मात्रा और जिस स्तर पर ऐसा पुनरीक्षण किया जाएगा, उसे स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया जाना चाहिए। पक्षकार और मध्यस्थ न्यायाधिकरण, विवाद के अंतिम निर्णय के लिए आवश्यक बैठकों की अतिरिक्त संख्या का पता लगाने के लिए संशोधन के लिए निर्दिष्ट स्तर पर एक और बैठक आयोजित कर सकते हैं, जो संख्या तब संदर्भ की शर्तों में एक अतिरिक्त अवधि के रूप में शामिल की जा सकती है।”

34. ओ. एन. जी. सी. (उपरोक्त) में निर्णय निस्संदेह स्पष्ट है कि शुल्क वृद्धि का सहारा केवल पक्षों की सहमति से लिया जा सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

एक पक्ष द्वारा असहमति की स्थिति में, न्यायाधिकरण को पिछली व्यवस्था को जारी रखना होगा, या मध्यस्थ के रूप में कार्य करने से इनकार करना होगा। फिर भी, क्या उस नियम का उल्लंघन,

जैसा कि वर्तमान मामले में, इस बात पर जोर देकर कि शुल्क में वृद्धि होनी चाहिए, इस अदालत की राय में, प्रति अयोग्यता के बराबर नहीं है, जो न्यायाधिकरण की नियुक्ति को रद्द करने और उसके जनादेश को समाप्त करने के स्तर तक पहुंचता है। इसे एच. आर. डी. (उपरोक्त) के तथ्यों से स्पष्ट किया जा सकता है, जहां चुनौती पांचवीं अनुसूची में उल्लिखित कारकों के अस्तित्व के आधार पर थी, यानी एक पूर्व मुख्य न्यायाधीश द्वारा विवाद के पक्षों में से एक को राय देना, एक असंबद्ध मामले के संबंध में। अदालत ने अयोग्यता की याचिका को खारिज कर दिया। इसी तरह, एक अन्य मध्यस्थ, एक पूर्व न्यायाधीश के बने रहने पर आपत्ति, क्योंकि उन्होंने उसी पक्ष के बीच पिछले संदर्भ में एक पुरस्कार दिया था, और यह धारणा कि उनके पास किसी प्रकार का विषय वस्तु पूर्वाग्रह होगा, को खारिज कर दिया गया था। दूसरा मामला, जिसमें इस अदालत ने उल्लेख किया कि शुल्क बढ़ाने की मांग की गई थी और शुल्क का निर्धारण करने के उद्देश्य से निर्दिष्ट अनुसूची में शुल्क के संशोधन के कारण यह आवश्यक था, विवाद का केंद्र बन गया। न्यायाधिकरण ने शुल्क बढ़ाने की आवश्यकता पर ध्यान दिया; फिर भी इसे उचित ठहराने के बाद, उच्च न्यायालय के पिछले फैसले के विपरीत, वास्तव में इसकी वृद्धि का निर्देश देने से इनकार कर दिया। इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि इस तरह का आचरण न्यायाधिकरण को संदर्भ जारी रखने और निर्णय लेने के लिए अयोग्य नहीं बनाता है। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण में इस अदालत के फैसले का विज्ञापन करना उपयोगी होगा।

भारत और ओआरएस बनाम गायत्री झांसी रोडवेज लिमिटेड और अन्य। 21 कहाँ में

एक समान तथ्य स्थिति, जहां न्यायाधिकरण ने महसूस किया कि शुल्क वृद्धि उचित थी, उसके जनादेश को चुनौती दी गई थी। अदालत ने याचिका को खारिज कर दिया और कहा कि:

“12. हमने दोनों पक्षों के विद्वान वकील को सुना है। हमारे विचार में, श्री नरसिम्हा, विद्वान वरिष्ठ वकील, यह कहने में सही हैं कि इस मामले के तथ्यों में, शुल्क अनुसूची, वास्तव में, पक्षों के बीच समझौते द्वारा निर्धारित की गई थी। यह शुल्क अनुसूची, 2004 के पहले के परिपत्र पर आधारित होने के कारण, अब समझौते की तारीख और विवाद की तारीख के बीच हुए लंबे समय के बीतने को देखते हुए समय-समय पर संशोधित होने के लिए उत्तरदायी थी।

21 2019 [9] एससीआर 1001 1017

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफ़कॉन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1018

समझौता। इसलिए, हमारा मानना है कि पहले की शुल्क अनुसूची को प्रतिस्थापित करते हुए, दिनांक 1 के परिपत्र में निहित शुल्क अनुसूची अब काम करेगी और मध्यस्थ इस अनुसूची के अनुसार अपनी शुल्क लेने के हकदार होंगे, न कि मध्यस्थता अधिनियम की चौथी अनुसूची के अनुसार।

13. हालाँकि, हम यह संकेत दे सकते हैं कि उच्च न्यायालय के समक्ष मध्यस्थों को हटाने के लिए जो आवेदन किया गया था, जिसमें कहा गया था कि उनका अधिदेश समाप्त होना चाहिए,

वह पूरी तरह से कपटपूर्ण है और इस सरल कारण से झूठ नहीं बोलेगा कि एक मध्यस्थ अपने कार्यों को करने में असमर्थ नहीं हो जाता है, यदि ऐसे मध्यस्थ (ओं) द्वारा पारित एक आदेश द्वारा, उन्होंने जो कुछ भी किया है, वह यह कहना है कि, वास्तव में, समझौता शुल्क लेने के लिए मध्यस्थता शुल्क को नियंत्रित करता है, लेकिन वे गायत्री झांसी रोडवेज लिमिटेड मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय का पालन करने के लिए बाध्य थे, जो स्पष्ट रूप से अनिवार्य था कि चौथी अनुसूची और समझौता नहीं।

14. मध्यस्थों ने केवल दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून का पालन किया और उस हिसाब से यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने कुछ भी गलत किया है ताकि उनके जनादेश को समाप्त किया जा सके जैसे कि वे अब अपने कार्यों को करने में असमर्थ हो गए हैं। विद्वान एकल न्यायाधीश, इसलिए, धारा 14 के आवेदन को अनुमति देने में त्रुटि थी और हमने इस मामले में विद्वान एकल न्यायाधीश के फैसले को दरकिनार कर दिया।”

35. ब्रिटेन के सर्वोच्च न्यायालय के हाल के एक फैसले में, हॉलिबर्टन में

कंपनी बनाम चुब बरमूडा इंश्योरेंस लिमिटेड 22., (इसके बाद, "हॉलिबर्टन") यह

अभिनिर्धारित किया गया था कि मध्यस्थ अंग्रेजी कानून के तहत प्रकटीकरण के कर्तव्य के तहत थे। पक्ष की स्वायत्तता का सिद्धांत, अदालत ने निष्कर्ष निकाला कि, एक समझौते द्वारा, पक्षों द्वारा माफ किया जा सकता है। यह कर्तव्य स्वयं यू. के. मध्यस्थता अधिनियम (1996 का) के एक अनिवार्य प्रावधान में निहित है।

36. हेलिबर्टन (ऊपर) एक तदर्थ मध्यस्थता शासित था।

न्यूयॉर्क के कानूनों के अनुसार लेकिन लंदन में बैठे। पीठासीन मध्यस्थ को हटाना विभिन्न आधारों पर आवेदन का विषय बन गया, जिसमें शामिल हैं -

22 2021 [2] सभी ई. आर. 1175

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

कुछ नियुक्तियों का खुलासा करने में उनकी विफलता ने उनकी निष्पक्षता के बारे में न्यायसंगत संदेह को जन्म दिया था। आवेदक ने आरोप लगाया कि इस कर्तव्य का मतलब था कि उसे बीमा कंपनी द्वारा पिछले विभिन्न मध्यस्थता अनुबंधों का खुलासा करना चाहिए था, जिसने उसे नामित किया था, विशेष रूप से कुछ मामलों में, जहां दावे कुछ हद तक उन लोगों के समान थे जिनके संपर्क में आवेदक आया था, लेकिन बीमाकर्ता ने इसके लिए अपने दायित्व से इनकार कर दिया था। सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात को रेखांकित किया कि मध्यस्थ न्यायिक कार्य करते हैं और उन्हें न्यायाधीशों के रूप में कार्य करने की आवश्यकता होती है, जो बिना किसी डर या पक्षपात के कार्य या दुर्भावना को प्रभावित करेंगे। मध्यस्थ की निष्पक्षता के बारे में पक्षों को संतुष्ट करने का एक

तरीका प्रकटीकरण है। प्रकटीकरण की भूमिका का सारांश लॉर्ड हॉज द्वारा दिया गया था जिन्होंने न्यायालय की राय दी थी:

“70. एक न्यायाधीश की तरह, एक मध्यस्थ को हमेशा स्पष्ट पूर्वाग्रह और वास्तविक लेकिन अचेतन पूर्वाग्रह की संभावना के लिए जीवित रहना चाहिए।... एक तरीका जिसमें एक मध्यस्थ पक्षपात की उपस्थिति से बच सकता है, वह उन मामलों का खुलासा करना है जिन्हें पक्षपात की वास्तविक संभावना को जन्म देने के लिए कहा जा सकता है। इस तरह का प्रकटीकरण पक्षों को प्रकट की गई परिस्थितियों पर विचार करने, आवश्यक सलाह प्राप्त करने और यह तय करने की अनुमति देता है कि क्या संदर्भ में मध्यस्थ की भागीदारी में कोई समस्या है और यदि ऐसा है, तो समस्या को कम करने या हटाने के लिए आपत्ति करना या अन्यथा कार्य करना है।

यू. के. अधिनियम संभावित या सेवारत मध्यस्थों पर उनकी स्वतंत्रता या निष्पक्षता से संबंधित मामलों के बारे में पक्षों को खुलासा करने का कोई स्पष्ट दायित्व नहीं रखता है। ब्रिटेन में अदालतों द्वारा इस कर्तव्य को पहले मान्यता नहीं दी गई थी। हेलिबर्टन (ऊपर) में सर्वोच्च न्यायालय को विशिष्ट रूप से यह निर्धारित करना था कि अंग्रेजी कानून में ऐसा कर्तव्य कहां मौजूद है। न्यायालय ने पाया कि मध्यस्थों के लिए प्रकटीकरण का कर्तव्य स्पष्ट रूप से 1996 के अधिनियम (मध्यस्थता अधिनियम, 1996) की धारा 33 पर आधारित था, जिसमें यह प्रावधान है कि मध्यस्थता न्यायाधिकरण पक्षों के बीच निष्पक्ष और निष्पक्ष रूप से कार्य करेंगे। जैसा कि न्यायालय ने कहा कि ऐसे मामलों का खुलासा करने का कानूनी दायित्व जो एक मध्यस्थ की निष्पक्षता के रूप में न्यायसंगत संदेह को जन्म दे सकता है, "वैधानिक के भीतर शामिल था।

निष्पक्षता का दायित्व "यह" भी निष्पक्षता के वैधानिक दायित्व का एक अनिवार्य परिणाम था।”

37. कर्तव्य पर चर्चा करते हुए, यू. के. सुप्रीम कोर्ट ने विचार किया कि क्या विवाद के किसी पक्ष के साथ वित्तीय संबंध रखने वाला कोई मध्यस्थ है जिसमें 1019

चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड. एडमिन। निर्माण वी।

मेसर्स ट्रांसटनलस्ट्रॉय एफ़कॉन्स (जे. वी.) [एस. रवींद्र भाट, जे.] 1020

वह या वह नियुक्त किया गया था इसका खुलासा करने के लिए एक कर्तव्य के तहत था; और माना कि यह

मध्यस्थ पर 1996 की धारा 33 के तहत निष्पक्षता के अपने वैधानिक कर्तव्य का पालन करने के लिए संबंध का खुलासा करने का दायित्व होगा।

अधिनियम। "अदालत ने अभिनिर्धारित किया कि अंग्रेजी कानून में प्रकटीकरण का एक कानूनी कर्तव्य था।

जो "धारा 33 के तहत एक मध्यस्थ के वैधानिक कर्तव्यों के भीतर शामिल था", यह कहते हुए कि यह "निष्पक्ष और निष्पक्ष रूप से कार्य करने के लिए मध्यस्थ के वैधानिक कर्तव्य का एक

घटक था", और यह कि यह धारा 33 के तहत मध्यस्थ के वैधानिक कर्तव्यों को ओवरराइड नहीं करता था।

अंग्रेजी कानून के तहत गोपनीयता और गोपनीयता का अलग कर्तव्य।³⁸ हमारा अधिनियमन एक मायने में सुधार है। पाँचवीं अनुसूची को एक प्रकटीकरण आवश्यकता के रूप में शामिल करने के कारण, अधिनियम में संशोधन करने के लिए संसद का सचेत प्रभाव, एक पात्रता शर्त [धारा 12 (1)] के रूप में और कार्य करने के लिए एक निरंतर पात्रता शर्त [धारा 12 (2)] के रूप में और बाद में, धारा 12 (5) के माध्यम से, पूर्ण अयोग्यता की शर्तें जो नियुक्ति और भागीदारी को अवैध बनाती हैं, अधिकार क्षेत्र के मूल तक जाती हैं, न्यायाधिकरण के अधिकार को विभाजित करती हैं, इस प्रकार सातवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भी शर्त के अस्तित्व के परिणामस्वरूप मध्यस्थ के जनादेश को समाप्त करती हैं, किसी भी अस्पष्टता की हवा को साफ करना है। क्रोध से बचने का एकमात्र तरीका, धारा 12 (5) के बारे में कहने के लिए छूट है-पक्ष द्वारा लिखित रूप में आहत होने की संभावना है।

39. चेन्नई मेट्रो द्वारा यह कहने का प्रयास कि असंकलित आधारों पर [या धारा 12 (5) के संदर्भ में वैधानिक अयोग्यता शर्तों के रूप में उल्लिखित लोगों के अलावा] न्यायाधिकरण की निष्पक्षता या स्वतंत्रता के बारे में न्यायसंगत संदेह के अस्तित्व के कारण न्यायिक अयोग्यता की अवधारणा को कायम नहीं रखा जा सकता है। हम धारा 12 (3) के संदर्भ में आवेदन के अवसर पर उक्त अनुसूची में उल्लिखित आधारों के अलावा शायद ही किसी अन्य आधार की कल्पना कर सकते हैं। यदि यह अदालत वास्तव में चेन्नई मेट्रो की याचिका को बरकरार रखने के लिए एक अपवाद बनाती है, तो परिणाम अदालत में एक विस्फोट और अन्य अप्रत्याशित परिणाम हो सकते हैं। संसद द्वारा सावधानीपूर्वक तैयार किए गए वैधानिक मार्ग को छोड़ने से मध्यस्थता प्रक्रिया पर और अधिक अनिश्चितता आ सकती है। दूसरे शब्दों में, न्यायिक स्थिति वह कुंजी नहीं है जो उन दरवाजों को खोलती है जो चुनौतियों को रोकते हैं, मध्य -

धारा, और "उन फाटकों को नहीं खोलना चाहिए जो कोर्ट को बंद कर देते हैं" 23

23 भारत संघ बनाम हिंदुस्तान विकास निगम 1993 (3) एससीआर 108-इस प्रकार कहा गया है

वैध अपेक्षा के सिद्धांत की प्रयोज्यता के बारे में अलग-अलग संदर्भ।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 14 एस सी आर।

मध्यस्थता कार्यवाहियों के दौरान मध्यस्थ की चुनौती के संभावित कारण क्या हो सकते हैं, इसके अलावा अधिनियम विशेष रूप से क्या प्रदान करता है।

40. पूर्वगामी कारणों से, यह अदालत मानती है कि चेन्नई मेट्रो का आवेदन सफल नहीं हो सकता है। मध्यस्थों को कार्यवाही फिर से शुरू करने और कानून के अनुसार मामले का फैसला करने का निर्देश दिया जाता है। विवादित आदेश को बरकरार रखा जाता है। तदनुसार आवेदन खारिज कर दिया जाता है और अपील का उपरोक्त शर्तों में निपटारा किया जाता है।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

अपील का निपटारा कर दिया गया और आवेदन खारिज कर दिया गया।

निधि जैन